Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

शिशुपालवध महाकाव्य में अव्यय-विचार

डॉ. गयाप्रसाद मिश्र,
सहायक अध्यापक,
मथुरिया इण्टर कॉलेज,
डिबाई, बुलन्दशहर।

सारांश– संस्कृत महाकाव्यकारों में सुप्रतिष्ठित महाकवि माघ न केवल काव्यपरक विशेषताओं से परिपूर्ण रचना करने में समर्थ थे, जिसके कारण **"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्। दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।", "मेघे माघे गतं वयः"** और **"काव्येषु माघः"** जैसी प्रशस्तिपरक सूक्तियाँ प्रसिद्ध हुईं, बल्कि व्याकरणशास्त्रीय नवीन शब्दों की रचना करके उनका सफलतापूर्वक काव्य में प्रयोग करने की कला में भी वह सिद्धहस्त थे, जिसके कारण उनके शिशुपालवध महाकाव्य के लिए "नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते" जैसी सूक्तियाँ प्रचलित हुईं और साहित्यसमालोचकों द्वारा उन्हें **'महावैय्याकरण'** की महनीय उपाधि से भी विभूषित किया गया। शिशुपालवध महाकाव्य में एक से बढ़कर एक व्याकरणिक प्रयोग संस्कृत भाषा की समृद्धि का परिचायक है।

मुख्य शब्द– महाकवि माघ, शिशुपालवध, महाकाव्य, संस्कृत, अव्यय।

'अव्यय' अन्वर्थ अर्थात् अर्थानुसारी सञ्ज्ञा है। जिसमें किसी प्रकार की विकृति न हो, प्रत्येक अवस्था में एक जैसा रूप रहे, उसे 'अव्यय' कहा जाता है। संस्कृत वैय्याकरणों ने अव्यय का लक्षण करने के लिए गोपथब्राह्मण की एक ब्रह्मपरक श्रुति का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है–

"सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।"[1]

अर्थात् जो तीनों लिङ्गों, सब विभक्तियों, और सब वचनों में एक समान रहता है, उसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन नहीं होता, उसे 'अव्यय' कहा जाता है।

वैय्याकरण आचार्य 'पाणिनि' ने 'अष्टाध्यायी' में अव्ययसञ्ज्ञाविधायक कुल पाँच सूत्रों की रचना की है। क्रमशः वे सूत्र हैं–

1. **स्वरादिनिपातमव्ययम् (1/1/36),**
2. **तद्धितश्चासर्वविभक्तिः (1/1/37),**
3. **कृन्मेजन्तः (1/1/38),**
4. **क्त्वातोसुन्कसुनः (1/1/39) और**
5. **अव्ययीभावश्च (1/1/40)।**[2]

इन सूत्रों के अनुसार- 1. स्वरादिगण में पठित शब्दों और निपातों, 2. जिनसे सारी विभक्तियाँ उत्पन्न नहीं होतीं, ऐसे तद्धितप्रत्ययान्त शब्दों, 3. मकारान्त तथा एजन्त कृत्प्रत्ययान्त शब्दों, 4. क्त्वा, तोसुन् और कसुन् प्रत्ययान्त शब्दों तथा 5. अव्ययीभाव समास की 'अव्ययसञ्ज्ञा' होती है।

शिशुपालवध महाकाव्य में महाकवि माघ ने पुरा, इति, अधोऽधः, चिराय, किल, ऋते, निकषा, सामि, दोषा, मा, मङ्क्षु, सपदि, ओम्, एवम्, खलु, त्रैधम्, अलम्, अथ, च, यदि, स्म, अहो, नु, ननु, क्व, जातु, नूनम्, अङ्ग, मिथः, न, यत्र, तत्र, बत, अलम्, यावत्, तावत्, बत, यथा, तथा, क इत्यादि बहुत से अव्ययों का प्रयोग किया है। 'पुरा' अव्यय का प्रयोग तो प्रथम सर्ग के तृतीय पद्य में ही मिल जाता है। इसी पद्य में 'इति' अव्यय का भी प्रयोग हुआ है। पद्य इस प्रकार है-

"चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा,

ततः शरीरीति विभावितकृतिम्।

विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति,

क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः।।"[3]

यहाँ महाकवि माघ ने 'पुरा' अव्यय का तो एक बार प्रयोग किया है, किन्तु 'इति' अव्यय का चार बार प्रयोग किया है, जो न केवल काव्यात्मक अर्थ की दृष्टि से बल्कि व्याकरणिक प्रयोग की दृष्टि से भी अत्यन्त उपयोगी है। इसी प्रकार महाकवि माघ के द्वारा प्रथम सर्ग के 36वें पद्य में और सप्तम सर्ग के 11वें पद्य में 'किल' अव्यय का प्रयोग द्रष्टव्य है। दशम सर्ग के 26वें पद्य में भी 'किल' अव्यय का प्रयोग हुआ है। इनमें प्रथम सर्ग के 36वें पद्य में प्रयुक्त 'किल' शब्द 'निश्चय' का वाचक है, यथा-

"लघूकरिष्यन्नतिभारभङ्गुरा-

ममूं किल त्वं त्रिदिवादवातरः।"(शिशु.- 1/36)

किन्तु सप्तम सर्ग के 11वें तथा दशम सर्ग के 26वें पद्य में प्रयुक्त 'किल' शब्द 'अपर' अर्थ का वाचक है, यथा-

"चरणगतसखीवचोऽनुरोधात्,

किल कथमप्यनुकूलयाञ्चकार।।"(शिशु.-7/11)

"प्रेयसामधररागरसेन

स्वं किलाधरमुपालि ररञ्जः।।"(शिशु.- 10/26)

शिशुपालवध महाकाव्य की 'सर्वङ्कषा' टीका के रचनाकार श्रीमहामहोपाध्याय कोलाचल मल्लिनाथसूरि ने यहाँ लिखा है कि- "किलेत्यपरमार्थे" अर्थात् 'किल' यहाँ पर 'अपर' अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।[4]

'ऋते' का प्रयोग प्रथम सर्ग के 38वें पद्य में हुआ है और यह 'बिना' अर्थ का बोध कराता है-

"ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः

क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः।।"[5]

अर्थात् 'सूर्य के बिना रात्रि के अन्धकार से मलिन आकाश को कौन धोकर निर्मल बना सकता है' (अर्थात् कोई नहीं)।

'निकषा' का अर्थ है 'समीप'। इसी अर्थ में महाकवि माघ ने भी इसे प्रयुक्त किया है- "क्या आपको याद है कि आपने समुद्र पार करके लङ्का के समीप रावण को मारा था?" पद्य इस प्रकार है-

"स्मरत्यदो दाशरथिर्भवन्भवा-

नमुं वनान्ताद्वनितापहारिणं।

पयोधिमाबद्धचलज्जलाविलं

विलङ्घ्य लङ्कां निकषा हनिष्यति।।"[6]

ध्यातव्य है कि महाकवि माघ संस्कृतकाव्यजगत् में एक ऐसे महाकवि के रूप में सुप्रतिष्ठित हुए, जिन्हें साहित्यसमालोचकों ने अत्यन्त उत्कृष्ट महाकवि के साथ-साथ महावैय्याकरण की उपाधि से भी समलङ्कृत किया है। अपनी

एकमात्र रचना शिशुपालवध महाकाव्य में उन्होंने व्याकरणशास्त्रीय अन्य प्रयोगों के साथ-साथ अव्ययों का प्रयोग करने में भी अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा का परिचय दिया है। महाकवि माघ **'स्म'** अव्यय का प्रयोग 'लट् लकार' की क्रिया के साथ करके उसे भूतकाल की क्रिया का वाचक बना देते हैं-

"मुक्तामयं सारसनावलम्बि

भाति स्म दामाप्रपदीनमस्य।"[7]

यहाँ महाकवि माघ ने पाणिनीय सूत्र **'लट् स्मे'** (3/2/118)[8] का बहुत सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। सूत्रानुसार 'स्म अव्यय के उपपद रहते अनद्यतनभूत परोक्ष अर्थ में धातु से परे लट् लकार होता है'। महाकवि माघ इस प्रकार के व्याकरणनिष्ठ प्रयोग करने में सिद्धहस्त थे। शिशुपालवध महाकाव्य में ऐसे प्रयोग पदे-पदे दर्शनीय हैं।

इसी प्रकार 'खलु' अव्यय का प्रयोग 'निश्चय' के अतिरिक्त 'निषेध' और 'प्रसिद्ध' अर्थ में भी करके महाकवि माघ व्याकरणशास्त्रीय प्रतिभा के साथ-साथ अपनी भाषावैज्ञानिकता को भी प्रमाणित करते हैं, यथा-

निश्चयार्थक 'खलु'-**"ज्ञातसारोऽपि खल्वाकः सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि।।"**[9]

निषेधार्थक 'खलु'- **"निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलुवाचिकम्।।"**[10]

प्रसिद्धार्थक 'खलु'- **"अनुगमने खलु सम्पदोऽग्रतःस्थाः।।"**[11]

कुछ अव्यय ऐसे हैं, जिनका प्रयोग महाकवि माघ ने कई बार किया है। ऐसे अव्ययों में अथ, न, च, अङ्ग इत्यादि विशेष प्रसिद्ध हैं। 'अथ' का प्रयोग अधिकांशतः सर्गों के प्रारम्भिक पद्यों में मिलता है,[12] किन्तु कहीं-कहीं इसके अतिरिक्त स्थानों में भी दिखलायी पड़ता है।[13] 'च' अव्यय का प्रयोग अधिकतर समुच्चय अर्थ में ही हुआ है, किन्तु कुछ पद्यों में यह अनन्तर अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है, यथा- **"स्पृशन्ति शरवत्तीक्ष्णाः स्तोकमन्तर्विशन्ति च।।"**[14]

'न' अव्यय का प्रयोग महाकवि माघ ने विशेष रूप से 'निषेध' अर्थ में ही किया है, किन्तु प्रथम सर्ग का 59वाँ पद्य ऐसा पद्य है, जहाँ 'न' का प्रयोग दो बार हुआ है और वहाँ यह सकारात्मक अर्थ का बोध कराता है, यथा-

"कलासमग्रेण गृहानमुञ्चता

मनस्विनीरुत्कयितुं पटीयसा।

विलासिनस्तस्य वितन्वता रतिं

न नर्मसाचिव्यमकारि नेन्दुना।।"[15]

'अङ्ग' अव्यय का प्रयोग सम्बोधनार्थक रूप में किया गया है- **"मम तावन्मतमिदं श्रूयतामङ्ग वामपि।।"**[16]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पाण्डित्यप्रदर्शन से परिपूर्ण अलङ्कृत काव्यशैली के संस्कृत महाकाव्यकारों में सुप्रतिष्ठित महाकवि माघ न केवल काव्यपरक विशेषताओं से परिपूर्ण रचना करने में समर्थ थे, जिसके कारण **"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्। दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।", "मेघे माघे गतं वयः"** और **"काव्येषु माघः"** जैसी प्रशस्तिपरक सूक्तियाँ प्रसिद्ध हुईं, बल्कि व्याकरणशास्त्रीय नवीन शब्दों की रचना करके उनका सफलतापूर्वक काव्य में प्रयोग करने की कला में भी वह सिद्धहस्त थे, जिसके कारण उनके शिशुपालवध महाकाव्य के लिए **"नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते"** जैसी सूक्तियाँ प्रचलित हुईं और साहित्यसमालोचकों द्वारा उन्हें **'महावैय्याकरण'** की महनीय उपाधि से भी विभूषित किया गया। शिशुपालवध महाकाव्य में एक से बढ़कर एक व्याकरणिक प्रयोग संस्कृत भाषा की समृद्धि का परिचायक है।

सन्दर्भ सूची-

1. द्रष्टव्य- लघुसिद्धान्तकौमुदी, अव्ययप्रकरण
2. द्रष्टव्य- पाणिनीय अष्टाध्यायी 1/1/36-40
3. शिशुपालवध- 1/3

4. शिशुपालवध- 7/11 और 10/26 पर आचार्य मल्लिनाथकृत सर्वङ्कषा टीका
5. शिशुपालवध- 1/38
6. वही- 1/68
7. वही- 3/10
8. द्रष्टव्य- पाणिनीय अष्टाध्यायी - 3/2/118 और लघुसिद्धान्तकौमुदी, लकारार्थ प्रक्रिया
9. शिशुपालवध- 2/12
10. वही- 2/70
11. वही- 7/27
12. वही- 2/1, 3/1, 6/1, 7/1, 9/1, 10/1,12/1, 13/1, 15/1, 16/1, 19/1
13. वही- 9/29
14. वही- 2/78
15. वही- 1/59
16. वही- 2/12